اٰیاتها ١٤ | ٦١ سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ ١٠٩ | رکوعاتها ٢

सूरए सफ़ मदनिय्या है, इस में चौदह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला[1]

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाला है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ② كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ

ऐ ईमान वालो क्यूं कहते हो वोह जो नहीं करते[2] कितनी सख़्त ना पसन्द है

اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ③ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ

अल्लाह को वोह बात कि वोह कहो जो न करो बेशक अल्लाह दोस्त रखता है उन्हें जो उस की राह में

فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ④ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ

लड़ते हैं परा (सफ़) बांध कर गोया वोह इ़मारत हैं रांगा (सीसा) पिलाइ़[3] और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा

يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا

ऐ मेरी क़ौम मुझे क्यूं सताते हो[4] हालां कि तुम जानते हो[5] कि मैं तुम्हारी त़रफ़ अल्लाह का रसूल हूं[6] फिर जब

زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤ وَاِذْ

वोह[7] टेढ़े हुए अल्लाह ने उन के दिल टेढ़े कर दिये[8] और फ़ासिक़ लोगों को अल्लाह राह नहीं देता[9] और याद करो जब

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ

ईसा बिन मरयम ने कहा ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी त़रफ़ अल्लाह का रसूल हूं

1 : सूरए सफ़ मक्किय्या है और बक़ौले ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا व जुम्हूर मुफ़स्सिरीन मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, चौदह 14 आयतें, दो सो इक्कीस 221 कलिमे, और नव सो 900 ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** सह़ाबए किराम की एक जमाअ़त गुफ़्तगूएं कर रही थी येह वोह वक़्त था जब तक कि हुक्मे जिहाद नाज़िल नहीं हुवा था, उस जमाअ़त में येह तज़्किरा था कि अल्लाह तआ़ला को सब से ज़ियादा क्या अ़मल प्यारा है ? हमें मा'लूम होता तो हम वोही करते चाहे उस में हमारे माल और हमारी जानें काम आ जातीं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, इस आयत के शाने नुज़ूल में और भी कई क़ौल हैं। मिन जुम्ला उन के एक येह है कि येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुसल्मानों से मदद का झूटा वा'दा करते थे। **3 :** एक से दूसरा मिला हुवा, हर एक अपनी अपनी जगह जमा हुवा, दुश्मन के मुक़ाबिल सब के सब मिस्ल शै वाह़िद के। **4 :** आयात का इन्कार कर के और मेरे ऊपर झूटी तोहमतें लगा कर **5 :** यक़ीन के साथ **6 :** और रसूल वाजिबुत्ता'ज़ीम होते हैं, उन की तौक़ीर और उन का एह़तिराम लाज़िम है, उन्हें ईज़ा देना सख़्त ह़राम और इन्तिहा दरजे की बद नसीबी है। **7 :** ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को ईज़ा दे कर राहे ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ और **8 :** उन्हें इत्तिबाए ह़क़ की तौफ़ीक़ से महरूम कर के। **9 :** जो उस के इ़ल्म में ना फ़रमान हैं। इस

www.dawateislami.net

مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ

अपने से पहली किताब तौरैत की तस्दीक़ करता हुवा[10] और उन रसूल की बिशारत सुनाता हुवा जो मेरे बा'द तशरीफ़

بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ

लाएंगे उन का नाम अहमद है[11] फिर जब अहमद उन के पास रोशन निशानियां ले कर तशरीफ़ लाए बोले येह खुला

مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰۤى اِلَى

जादू है और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[12] हालां कि उसे इस्लाम की तरफ़

الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا

बुलाया जाता हो[13] और ज़ालिम लोगों को अल्लाह राह नहीं देता चाहते हैं कि अल्लाह का नूर[14]

نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ

अपने मूंहों से बुझा दें[15] और अल्लाह को अपना नूर पूरा करना पड़े बुरा मानें काफ़िर वोही है

الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ

जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब

كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى ع ٩

करे[16] पड़े बुरा मानें मुश्रिक ऐ ईमान वालो[17] क्या मैं बता दूं वोह सौदागरी

आयत में तम्बीह है कि रसूलों को ईज़ा देना शदीद तरीन जुर्म है और इस के वबाल से दिल टेढ़े हो जाते हैं और आदमी हिदायत से महरूम हो जाता है। **10 :** और तौरैत व दीगर कुतुबे इलाहिय्यह का इक़रार व ए'तिराफ़ करता हुवा और तमाम पहले अम्बिया को मानता हुवा। **11 हदीस :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुक्म से अस्हाबे किराम नजाशी बादशाह के पास गए तो नजाशी बादशाह ने कहा मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अल्लाह तआला के रसूल हैं और वोही रसूल हैं जिन की ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बिशारत दी, अगर उमूरे सल्तनत की पाबन्दियां न होतीं तो मैं उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कफ़्श बरदारी (ना'लैने शरीफ़ैन उठाने) की ख़िदमत बजा लाता। (ابوداؤد) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम से मरवी है तौरैत में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिफ़त मज़्कूर है और येह भी कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आप के पास मदफ़ून होंगे। अबू दावूद मदनी ने कहा कि रौज़ए अक़्दस में एक क़ब्र की जगह बाक़ी है। (ترمذی) ह़ज़रते का'ब अह़बार से मरवी है कि ह़वारियों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया : या रूह़ल्लाह ! क्या हमारे बा'द और कोई उम्मत भी है ? फ़रमाया : हां अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्मत वोह लोग हुकमा, उ़लमा, अबरार व अत्क़िया हैं और फ़िक़्ह में नाइबे अम्बिया हैं अल्लाह तआ़ला से थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी और अल्लाह तआ़ला उन से थोड़े अ़मल पर राज़ी। **12 :** उस की तरफ़ शरीक और वल्द की निस्बत कर के और उस की आयात को जादू बता कर। **13 :** जिस में सआ़दते दारैन है। **14 :** या'नी दीने बरह़क़ इस्लाम **15 :** क़ुरआने पाक को शे'र व सेह्र व कहानत बता कर। **16 :** चुनान्चे हर एक दीन ब इ़नायते इलाही इस्लाम से मग़्लूब हो गया। मुजाहिद से मन्क़ूल है कि जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नुज़ूल फ़रमाएंगे तो रूए ज़मीन पर सिवाए इस्लाम के और कोई दीन न होगा। **17 शाने नुज़ूल :** मोमिनीन ने कहा था कि अगर हम जानते कि अल्लाह तआ़ला को कौन सा अ़मल बहुत पसन्द है तो हम वोही करते इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस आयत में उस अ़मल को तिजारत से ता'बीर फ़रमाया गया क्यूं कि जिस त़रह़ तिजारत से नफ़्अ़ की उम्मीद होती है इसी त़रह़ उन आ'माल से बेहतरीन नफ़्अ़ रिज़ाए इलाही और जन्नत व नजात ह़ासिल होती है।

www.dawateislami.net

تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿١٠﴾ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ

जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले[18] ईमान रखो **अल्लाह** और उस के रसूल पर और

تُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो येह तुम्हारे लिये बेहतर है[19] अगर

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

तुम जानो[20] वोह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

नहरें रवां और पाकीज़ा महल्लों में जो बसने के बाग़ों में हैं येही बड़ी

الْعَظِيْمُ ﴿١٢﴾ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ

काम्याबी है और एक ने'मत तुम्हें और देगा[21] जो तुम्हें प्यारी है **अल्लाह** की मदद और जल्द आने वाली फ़त्ह[22] और ऐ महबूब

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ

मुसल्मानों को ख़ुशी सुना दो[23] ऐ ईमान वालो दीने ख़ुदा के मददगार हो जैसे[24]

عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ

ईसा बिन मरयम ने ह़वारियों से कहा था कौन हैं जो **अल्लाह** की त़रफ़ हो कर मेरी मदद करें ह़वारी

الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَ

बोले[25] हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं तो बनी इसराईल से एक गुरौह ईमान लाया[26] और

كَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾ ع ٢ ١٥ ١٠

एक गुरौह ने कुफ़्र किया[27] तो हम ने ईमान वालों को उन के दुश्मनों पर मदद दी तो ग़ालिब हो गए[28]

18 : अब वोह तिजारत बताई जाती है। **19 :** जान और माल और हर एक चीज़ से **20 :** और ऐसा करो तो **21 :** इस के इ़लावा जल्द मिलने वाली **22 :** इस फ़त्ह से या फ़त्ह मक्का मुराद है या बिलादे फ़ारस व रूम की फ़त्ह। **23 :** दुन्या में फ़त्ह की और आख़िरत में जन्नत की। **24 :** ह़वारियों ने दीने इलाही की मदद की थी जब कि **25 : ह़वारी** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुख़्लिसीन को कहते हैं, येह बारह ह़ज़रात थे जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर अव्वल ईमान लाए, इन्हों ने अ़र्ज़ किया **: 26 :** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर **27 :** इन दोनों में क़िताल हुवा **28 :** ईमान वाले। इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान पर उठा लिये गए तो उन की क़ौम तीन फ़िर्क़ों में मुन्क़सिम हो गई **एक** फ़िर्क़े ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की निस्बत कहा कि वोह **अल्लाह** था आस्मान पर चला गया **दूसरे** फ़िर्क़े ने कहा वोह **अल्लाह** तआ़ला का बेटा था उस ने अपने पास बुला लिया **तीसरे** फ़िर्क़े ने कहा कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के बन्दे और उस के रसूल थे उस ने उठा लिया, येह तीसरे फ़िर्क़े वाले मोमिन थे, इन की उन दोनों फ़िर्क़ों से जंग रही और काफ़िर गुरौह इन पर ग़ालिब रहे, यहां तक कि सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़ुहूर फ़रमाया उस वक़्त ईमानदार गुरौह उन काफ़िरों पर ग़ालिब हुवा, इस तक़्दीर पर

www.dawateislami.net